समकालीन साहित्य का स्वरूप और संदर्भ

डॉ. दीपक विनायकराव पवार
असोसिएट प्रोफेसर
दिगंबर बिंदू महाविद्यालय भोकर

'साहितस्य भावः साहित्यम' जिसमें हित की भावना निहित हो उसे साहित्य कहते हैं । साहित्य में समान रूप से सबके हित की भावना निहित होती है, किंतु उसके स्वरूप के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं । समकालीन यथार्थ का चित्रात्मक स्वरूप ही साहित्य है । समकालीन विसंगतियों का व्यंग्य विद्रुप साहित्य की विशेषता है । शायद इसी कारण साहित्य का समकालीन परिस्थितियों से गहरा संबंध है जिसके कारण साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया । कहने का तात्पर्य यह है कि युगीन परिस्थितियों के अनुसार साहित्य सृजन होता है । उससे प्रेरणा पाकर साहित्यकार साहित्य सृजन करता है । किसी भी युग की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक समस्याओं क चित्रण ही समकालीन बोध है ।

समकालीन साहित्य 1945 से प्रकाशित गद्य, कविता और नाटक को संदर्भित करता है और इसमें दो आंदोलन शामिल है । द्वितीय विश्व युद्ध की हिंसा ने कलाकारों को उत्तर– आधुनिकतावाद नामक आंदोलन में मानव स्वभाव और सच्चाई की पारंपरिक समझ पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया, जिसने भव्य कथा पर और अधिकार अविश्वास किया । 1990 के दशक तक ।

बदलते परिस्थितीयों के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक मान्यताएँ भी स्वयं ही परोक्ष रूप में नित्य नवीन रूप धारण कर लेती है । कुछ समय के पश्चात परंपरागत विचारधारा गौण होती है तथा प्रचलित भावधारा प्रमुख बन जाती है । साहित्यकार समाज में प्रचलित स्वरूप को व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता । इस प्रकार तत्कालीन साहित्य को प्रभावित करने का श्रेय समकालीनता को ही है । निसंदेह हम यह कह सकते हैं साहित्य में समकालीनता, साहित्य और समकालीनता संबंध के मूल पर विचार करते समय प्रायः चार हिंदी कवियों का नाम उल्लेखनीय हैं कबीर, निराला, अज्ञेय, मुक्तिबोध । इस साधार पर समकालीन कविता की भूमिका की लेखिका डॉ. सुधा रणजीत ने कबीर से समकालीन कविता का आरंभ माना है ।

समकालीन हिंदी कहानी एक नये वेग, नयी वेषभूषा, और नई तकनीक एवं विचारधारा के साथ आगे बढ़ी है । समकालीन कहानी में पुराने–नए सभी कहानीकार अविराम, गति से कहानी साहित्य का सृजन करते रहे हैं । जीवन में जटिल और व्यापक यथार्थ की सीधी और बेबाक अभिव्यक्ति समकालीन कहानी की विशेषता है । इसमें जहाँ शिल्प की नवीनता है, भावबोध और उद्देश्य की नवीनता निकलकर समकालीन कहानी पुनः अपने सहज और संतुलित रूप को प्राप्त कर रही है । विसंगतियों से सीधा साक्षात्कार करती हुई समकालीन कहानियाँ जीवन के भोगे हुए सत्यों को इमानदारी व प्रखरता के साथ अभिव्यक्त करती हुई प्रगति पथ पर अग्रसर हैं ।

आज के दौर की समकालीन कथा साहित्य वह नहीं है? जो नवे–8 वें दशक का कथा–साहित्य है । सामाजिक एवं राजनीतिक परिवर्तनों–आजादी के बाद भारतीय का लागू होना, उदारीकरण, भूमंडलीकरण, निजीकरण, पंजीकरण, नव उपविशेवाद की आर्थिक नीतियों को लागू होना, दिसेंबर 1992 पारित संशोधन के 73वें संशोधन के बाद ग्रामीण स्त्रियों को तैंतीस प्रतिशत आरक्षण मिलना, 'हिंदू कोड बिल' का पारित होना– से भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति में जबर्दस्त परिवर्तन आया

जिसका प्रभाव कथा–साहित्य में भी दिखाई देता है । जैसे–जैसे परिस्थितियाँ बदलती हैं उन्ही के साथ–साथ सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक मान्यताएँ भी स्वंय ही परोक्ष रूप में नित्य नवीन रूप धारण कर लेती है । साहित्यकार समाज में प्रचलित स्वरूप को व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता । इस प्रकार तत्कालीन साहित्य को प्रभावित करने का श्रेय समकालीनता को ही है । निसंदेह हम यह कह सकते हैं कि साहित्य में समकालीनता का अत्यंत महत्व है । साहित्य और समकालीनता संबंध के मूल पर विचार करते समय प्रायः चार हिंदी कवियों का नाम उल्लेखनीय है । कबीर, निराला, अज्ञेय और मुक्तिबोध । इस आधार पर समकालीन कविता की लेखिका डॉ. सुधा रणजीत ने कबीर से समकालीन कविता का आरंभ माना है । उन्होंने अपना तर्क देते हुए कहा है, "निरंतर परंपरा की कोई अपेक्षा जरूरी न हो तो फिर कबीर को समकालीनता. गीता का प्रवर्तक क्यों माना जा सकता है, क्योंकि विचार बोध काव्याबोध और स्वभाव बोध की दृष्टि से अधिकांश समकालीन कवि अपने किसी पूर्वज से प्रेरित होते रहे है तो कबीर से भी ।"[1] युगीन परिस्थितियों से प्रेरणा पाकर कवियों ने साहस, और ऊर्जा का संचार करना अपना कर्तव्य समझा । भक्तिकाल में मुसलमान राज्य भारत वर्ष में प्रायः प्रतिष्ठित हो चुका था । वैसे नैराश्य और अवसाद के वातावरण में कवियों ने अपने उपास्य देव के स्थरूप और चरित्र निरुपण में डूबे हुए थे । भक्तिकाल में मुसलमान शासकों के शासन में लोग संत्रस्थ थे । इसलिए समाकालीन बोध का विस्फोट पहली मध्ययुगीन साहित्य में हुआ । तत्कालीन समाज की दुरवस्था का यथार्थ रूप का अंकन निम्न कविता में यों अंकित किया गया है–

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख
बलि बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।"[3]

इन परिस्थितियों के कारण निम्नवर्ग में जन्म लेकर, दुर्भर जीवन बीताने वाले कवि उस व्यवस्था की निंदा की । इन कवियों में कबीर, रैदास, सरहप्पा, नानक, दादू आदि उल्लेखनीय है । सर्वमानव समानता की भावना कबीर में अधिक रूप से मिलती है –

"एक त्वचा, हाड, मल, मूत्र एक रुधिर एक गूदा,
एक बूंद ले सृष्टि रच्यों है को ब्राहमण, तुलसी को शुद्रा ।"[4]

तुलसी ने पीडित मानवजाति को राम का मर्यादा पुरुषोत्तम का लोकमंगल रूप दिखाकर समाज को स्वस्थ पथ मार्ग बताया तो सूरदास में अपने गीतों से कृष्ण के रागात्मक मानवीय रूप से मानव हृदय में आस्था एवं प्रेम की भावना जागृत की । इससे भी आगे जाकर जन–सामान्य को काव्य का लक्ष्य बनाने वालों में प्रमुख महत्मा है । वे धर्मोपदेशक ही नहीं, वरन् पाखंड धर्म के परमशत्रु थे । वे पीडित मानव के पक्षधर थे, उनके वाणी में विस्फोट था । जात–पात का खंडन वे साहस के साथ करते है वैसा और किसी कवि में नही है । रीतिकालीन कवि आश्रदाताओ कां मनोरंजन करने के लिए श्रृंगारपरक रचनाएँ करते थे।

आधुनिक युग यथास्थिति से चिपके रहने युग नही है । युगीन संवेदनशीलता, इतनी तीव्रगति से बदलती जा रही है कि हर नई व्यवस्था के जन्म के साथ ही उसकी मृत्यु के आसार नजर आते है । इस अर्थ में किसी भाषा के साहित्य में बहुत कम अवधि में विविध मोडों का निर्माण होना उस भाषा के साहित्य की जीवन्तता का लक्षण माना, जाना चाहिए। हिंदी कहानी के संबंध में यदि उक्त विश्लेषण सही माना जाए तो बीस बरसों की छोटी अवधि में हिंदी कथा–साहित्य की गतिशीलता जो उसके विविध नामकरणों से सूचित् हुई है ।

भारतेंदु युग में नविन चेतना का सुत्रपात हुआ। पश्चिमी विचारकों के चिंतन प्रभाव से लोग प्रभावित होने लगे थे। इस युग ने परंपरागत भारतीय चिंतनधारा को प्रभावित किया। भारतेंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र आदि कवियों ने व्यक्तिवाद, नारी स्वातंत्र्य, राष्ट्रवाद आदि का प्रचार होने लगा। इस युग के प्रमुख लेखकों मे भारतेंदू, बालकृष्ण भट्ट प्रतापनारायण मिश्र आदि हैं ।

इन रचनाकारों ने देश की यथार्थ स्थिति को देशवासियों के सामने प्रस्तुत कर उनमें राष्ट्रीय चेतना, जगाने का कार्य किया है। द्विवेदी युग में समाज सुधार एवं राष्ट्रीय उत्थान की भावना का प्राबल्य रहा। छायावादी कवियों ने इतिवृत्तात्मकता के साथ प्रकृति का अलोकिक–अलौकिक अवलंबन, काव्य के प्रेरक उपादान प्रस्तुत किए। प्रगतिवाद ने आर्थिक साधनों की समानता पर नियंत्रण को प्रस्तुत कर वर्ग विहिन समाज की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत किया। प्रगतिवाद युग में शोषक वर्ग प्रति तीव्र आक्रोष व्यक्त हुआ।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद जीवन मूल्योंमें तेजी से बदलाव आया । स्वीकृत मानव मूल्य परंपराएँ तथा विश्वास, नष्ट हो गये । चीनी, पाकिस्तानी और युध्द की घटनाओं को लेकर साहित्यकारों ने रचनाएँ की । देश की एकता और अखंडता को बनाये रखने के लिए रचनाकारों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया । देशभक्ति, राष्ट्रवाद, शौर्य, शक्ति, साहस भरी रचनाएँ निर्माण कर लोगों में संचार पैदा करना साहित्यकार का प्रधान कर्तव्य बन गया । भारतेंदू युग में कवियों ने समकालीन समस्योओं का चित्रण अपनी कविताओं के माध्यम से किया । अंग्रेजों के शोषण से संत्रस्त भारत की दुस्थिति का आँखों देखा वर्णन भारतेंदु हरिश्चंद्र की 'भारत दुर्दशा' में दिखाई देता है–

"आवहु सब मिलि रोवहु भारत भाई,
हा । हा । यह भारत दुर्दशा न देखी जाई ।"4

सातवें दशक के मध्य भारतीय जनमानस में प्रतीक्षा का भाव समाप्त हो गया । इसके स्थान पर मोहभंग और सामाजिक परिवर्तन के लिए आतुरता– अधीरता का भाव पैदा हुआ । समकालीन महिला एवं पुरुष कथाकारों ने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वार्थ प्रेरित ताकतों के विरूध्द लड़ने हेतु अपनी कहानियों एवं उपन्यासों को प्रगतिशीलता से आच्छादित किया । सभी ने अपनी तर्कपूर्ण बात रखने का साहस दिखाया । यही कारण है कि उनके कथा–साहित्य में घोर विद्रोह के दहकते शोषित, पीड़ित, जन समुदाय के ज्वालामुखी को भूखंड के भीतरी जलन को अभिव्यक्ति मिली । व्यापक मोहभंग और व्यवस्था का शिकार हुए आम आदमी के अंदर की पीड़ा, तनाव, विवशता, अबोधता, सहिष्णुता अकेलापन, हताशा, निराशा, घर–परिवार, खीझ और गुस्से को उसके कटु अनुभवों को समग्रता में उद्घाटित समन्कालीन कथा– साहित्य में किया जाता रहा है ।

समकालीन बोध का पूर्ण विकास आठवें और नवें दशक में हुआ है । मार्क्सवादी चेतना से अभिप्रेरित प्रगतिवादी काव्य में इसके प्रति अत्यंत ध्यान दिया गया है । डॉ. रांगेय राघव अपनी कविता में कृषक वर्ग की यथार्थ स्थिति का मर्मस्पर्शी चित्रण करते हैं–

"आह रे क्षुधित किसान ।।
छीन लेता सब कुछ भूस्वामी
उगाता जो श्रम से तू खेत
नहीं तेरा उसपर अधिकार ।।
झोपडों में तू लू से त्रस्त
सभ्यता की बलि जाता हाय
कर लिया करता है चीत्कार ।"5

सामाजिक व्यवस्था की स्थिति की इतनी विचित्र है कि अमीर लोग पीढ़ी दर पीढ़ी से अमीर के रूप में गरीब लोग गरीब के रूप में जीवन व्यतीत कर रहे हैं ।

समकालीन साहित्य सुनिश्चित सामाजिक बदलाव लाने के लिए जनसंघर्ष के प्रतिपूर्ण समर्पित है। इस दौर की महिला कथाकार भी पिछे नहीं रही । वे मुक्ति का मार्ग तलाशती आधुनिक स्त्री जीवन के विविध पहलुओं को परत दर परत उकेरती है ।

चाहे वह स्त्री की 'आर्थिक स्वायत्ता' का प्रश्न हो, या 'यौन–सुचिता' का प्रश्न हो, या स्त्री के आत्म संबंधों का प्रश्न हो, चाहे पुरुष के हवस का शिकार होती स्त्री का प्रश्न हो या आधुनिक स्त्री का आक्रोश हो । महिला रचनाकारों ने सर्जनात्मक स्तर पर पुरुष की स्त्री–विरोधी मूल्य मर्यादाओं, मिथकों, आदर्शों आदि की कड़ी आलोचना कर उन्हें तोड़ने के लिए अपने कथा–साहित्य में अपने मन तथा विचार के अनुकूल स्त्री–पात्रों को गढ़कर उन्हें अपने लेखनी द्वारा प्रस्तुत करने का पूरा प्रयास किया है । समकालीन नारीवादी चिंतक आशा रानी व्होरा लिखती है– "सृष्टि की रचना में स्त्री का योगदान पुरुष के समान योगदान से कहीं ज्यादा है, वह मानव की जन्मदात्री है । फिर भी संसार के विकास में उसका योगदान क्यों नगण्य रहा? आज में समानता की भागीदारी केवल विधान के व्यवहार में कागजों पर है, व्यवहार में इस आँधी आबादी का स्थान अल्पसंख्याको के समान ही है । ऐसा क्यों? इसी वजह से सवाल उठते हैं कि क्या वह अल्पसंख्यक है? क्या वह दूसरे दर्जे की इंसान है? क्या वह बुध्दी या अन्य मानवीय गुणों में पुरुषों से हीन है? क्या वह पुरूष पति का मन बहलाव करने की वस्तु है?"[6]

निष्कर्ष रूप से हम सकते है कि समकालीन साहित्यकारों ने पहले से भी अधिक जन–जीवन के निकट आकर समस्याओं अनुशीलन करने लगे हैं । साहित्यकारों ने समालीन समस्याओं का चित्रण करके समाज को युगीन बोध से बोचित करने का प्रयास किया है । समकालीन साहित्य चिंतन का नयापन यह है कि इसका रूप अब एक जैसा नहीं है । किसी एक ही विचार का महत्व अलग–अलग हो गया है के अंतर्गत आता है; जिसमें दलित, आदिवासी, स्त्री और पर्यावरण संवेदना प्रमुख है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) सं.डॉ. रणजीत– अद्यतन हिन्दी कविता– भूमिका पृष्ठ–3
2) तुलसीदास– कवितावली– उत्तरकांड–पृ.32
3) कबीर ग्रंथावली – पृ.सं.150
4) सं ब्रजरलदास– भारतेदु ग्रंथावली–प्रथम खंड–प्रथम संस्करण, पृ. 465
5) रांगेय राघव– सर्ग 14–पृ.492
6) रामचंद्र तिवारी– हिंदी गद्य साहित्य – पृ.122
7) डॉ. हेमलता पी– समकालीन कविता में वर्तमान जीवन यथार्थ– सी. पृ. 107
8) धर्मजय वर्मा– आधुनिक हिंदी कहानी
9) डॉ.साधना शाह– हिंदी कहानी– संरचना– वाणी प्रकाशन–नई दिल्ली
10) डॉ. सुबेदार राय– स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी का विकास– अनुभव प्रकाशन कानपुशोध लेखक